Visit **Dwarkadheeshvastu.com** For

FREE **Vastu Consultancy, Music, Epics, Devotional Videos**
Educational Books, Educational Videos, Wallpapers

****

All Music is also available in **CD** format. **CD Cover** can also be print with your Firm Name

****

We also provide this whole Music and Data in **PENDRIVE** and **EXTERNAL HARD DISK.**

Contact : Ankit Mishra (+91-8010381364, dwarkadheeshvastu@gmail.com)

Jh d`”.k pkyhlk

श्रीकृष्ण चालीसा

॥ दोहा ॥

वंशी शोभित कर मधुर, नील जलद तन श्याम।
अरुण अधर जनु बिम्ब फल, नयन कमल अभिराम॥

जिनके हाथों में वंशी सुशोभित है, जिनके शरीर का रंग नीले बादलों-सा है, जिनके होंठ बिंब फल की तरह लाल हैं तथा नेत्र कमल से सुंदर हैं,

पूर्ण इन्दु अरविन्द मुख, पीताम्बर शुभ साज।
जय मनमोहन मदन छवि, कृष्ण चन्द्र महाराज॥

जिनका चन्द्रमुख नीलकमल के समान है, जिन्होंने पीताम्बर पहना है, ऐसे काम समान छवि वाले हे मन मोहन श्रीकृष्णजी! आपकी जय हो।

॥ चौपाई ॥

जय यदुनन्दन जय जगवन्दन।
जय वसुदेव देवकी नन्दन॥

हे यदुवंश के तिलक! आपकी जय हो। संपूर्ण जगत द्वारा वंदित, हे वसुदेव और देवकी के पुत्र, आपकी जय हो, जय हो, जय हो।

जय यसुदा सुत नन्द दुलारे।
जय प्रभु भक्तन के दृग तारे॥

हे यशोदानंदन! आपकी जय हो। हे नंद बाबा के दुलारे! आपकी जय हो। भक्तों की आंखों के तारे हे प्रभु! आपकी जय हो, जय हो, जय हो।

जय नटनागर नाथ नथइया।
कृष्ण कन्हैया धेनु चरइया॥

हे नटों (नाचने वालों) के अधिपति, कालिया नाग को नाथने वाले कृष्ण-कन्हैया, गौओं को चराने वाले गोपाल! आपकी जय हो, जय हो, जय हो।

पुनि नख पर प्रभु गिरिवर धारो।
आओ दीनन कष्ट निवारो॥

आपने अपने नख पर गोवर्धन पर्वत को धारण किया (व्रजवासियों की रक्षा की), अब आकर दीन-हीन (हम सबके) कष्टों का निवारण करो।

वंशी मधुर अधर धरि टेरी।
होवे पूर्ण विनय यह मेरी॥

मधुर वंशी को अपने होंठों से लगाकर ऐसी मधुर तान छेड़िए, जिससे मेरे सभी मनोरथ पूर्ण हो जाएं, यह मेरी आपसे विनम्र प्रार्थना है।

आओ हरि पुनि माखन चाखो।
आज लाज भारत की राखो॥

हे प्रभु, एक बार फिर से (व्रज की गलियों में) माखन चखने के लिए आ जाओ। एक बार फिर से भारत की लाज रखने के लिए आ जाओ।

गोल कपोल चिबुक अरुणारे।
मृदु मुस्कान मोहिनी डारे॥

हे कृष्ण! आपके गाल गोल तथा ठोड़ी लाल है। आपकी मधुर मुस्कान मोहित करने वाली है अर्थात जिसने आपकी छवि को देखा, वह आपका हो गया।

रंजित राजिव नयन विशाला।
मोर मुकुट बैजन्ती माला॥

कमल सदृश विशाल नयन आपकी छवि को बढ़ा रहे हैं। आपके माथे पर मोर का मुकुट है और गले में वैजयंती के पुष्पों की माला सुशोभित हो रही है।

कुण्डल श्रवण पीतपट आछे।
कटि किंकणी काछन काछे॥

आपके कानों में कुण्डल हैं तथा आपने पीतांबर धारण किया हुआ है। आपकी करधनी की घंटियों और घुटनों तक बंधी धोती की शोभा कहे नहीं बनती।

नील जलज सुन्दर तनु सोहै।
छबि लखि सुर नर मुनि मन मोहै॥

नीले बादलों-सी आपके सुंदर शरीर की छवि (अनुपम सौंदर्य के स्वामी) देवताओं, मनुष्यों और ऋषि-मुनियों के मन को मोहित करने वाली है।

मस्तक तिलक अलक घुंघराले।
आओ कृष्ण बांसुरी वाले॥

आपके मस्तक पर तिलक सुशोभित हैं। आपके बाल घुंघराले हैं। (ऐसी छवि से सुशोभित) हे बांसुरी वाले श्रीकृष्ण! मेरी पुकार सुनकर आ जाओ।

करि पय पान, पूतनहिं तार्‌यो।
अका बका कागा सुर मार्‌यो॥

आपने पूतना के स्तनों का पान कर उसे भवसागर से तार दिया। अकासुर, बकासुर और कागासुर को भी आपने मारा (उनका उद्धार किया)।

मधुबन जलत अगिन जब ज्वाला।
भइ सीतल, लखतहिं नन्दलाला॥

मधुबन को जलाने वाली भीषण अग्नि की ज्वालाओं ने जैसे ही नंद के लाला अर्थात् श्रीकृष्ण को देखा, अपना स्वभाव छोड़ शीतल हो गई।

सुरपति जब ब्रज चढ़्यो रिसाई।
मूसर धार वारि वर्षाई॥

देवराज इन्द्र ने (अपनी पूजा न होने पर) क्रोध में आकर जब व्रज पर आक्रमण किया, मूसलधार वर्षा से व्रजवासियों को त्रस्त कर दिया—

लखत-लखत ब्रज चहन बहायो।
गोवर्धन नख धारि बचायो॥

देखते-देखते जब व्रज बहने लगा, तब गोवर्धन को अपने हाथ की छोटी (कनिष्ठिका) अंगुली के नख पर रख कर आपने गोपालों की रक्षा की।

लखि यसुदा मन भ्रम अधिकाई।
मुख महं चौदह भुवन दिखाई॥

यह जानकर कि माता यशोदा का मन मोहवश अधिक भ्रमित हो गया है, आपने माता को अपने मुख में चौदह भुवनों के दर्शन करा दिए।

दुष्ट कंस अति उधम मचायो।
कोटि कमल जब फूल मंगायो॥

दुष्ट कंस ने जब अपने पापाचार से अत्यधिक उत्पात मचाया और व्रज-वासियों को कालीदह से एक करोड़ कमल लाने को कहा—

नाथि कालियहिं तब तुम लीन्हें।
चरणचिह्न दै निर्भय कीन्हें॥

तब आपने कालीदह में प्रवेश कर कालिया नाग को नाथ लिया और उसके माथे पर अपने चरण का चिह्न देकर उसे निर्भय बना दिया।

करि गोपिन संग रास विलासा।
सबकी पूरण करि अभिलाषा॥

आपने सभी गोपियों के साथ रास-विलास (महारास) किया और प्रत्येक गोपी की अभिलाषा (कृष्ण मुझ संग रास करें) को पूर्ण किया।

केतिक महा असुर संहारयो।
कंसहि केस पकड़ि दै मारयो॥

आपने कितने ही अर्थात् अनेक भयंकर तथा मायावी असुरों का संहार किया। कंस को केशों से पकड़ कर (उसी के राजमहल में) पटक कर मार दिया।

मात-पिता की बन्दि छुड़ाई।
उग्रसेन कहं राज दिलाई॥

अपने माता-पिता (वसुदेव और देवकी) को कारावास से मुक्त कराया तथा अपने नाना महाराज उग्रसेन को मथुरा के राजसिंहासन पर बिठाया।

महि से मृतक छहों सुत लायो।
मातु देवकी शोक मिटायो॥

पाताल लोक से आप अपने छहों मृतक भाइयों को वापस पृथ्वी लोक पर लेकर आए। आपने अपनी माता देवकी के पुत्रशोक को मिटाया।

भौमासुर मुर दैत्य संहारी।
लाए षट् दस सहस कुमारी॥

भौमासुर और मुर नामक दैत्य का संहार करके आप उनकी कैद से उन सोलह हजार राजकुमारियों को छुड़ा लाए, जिन्हें उन्होंने युद्ध में जीता था।

दे भीमहिं तृणचीर इशारा।
जरासंध राक्षस कहं मारा॥

आपने तिनके को चीरकर, भीमसैन को युक्ति समझाकर जहां जरासंध का संहार किया, वहीं भीम को विपत्ति से बचाया, नहीं तो भीम मारे जाते।

असुर बकासुर आदिक मार्यो।
भक्तन के तब कष्ट निवार्यो॥

बकासुर आदि राक्षसों को मारकर (उन्हें भी सद्गति देकर) आपने अपने भक्तों के कष्टों का निवारण किया—उन्हें सुखी किया।

दीन सुदामा के दुःख टार्‌यो।
तंदुल तीन मूठि मुख डार्‌यो॥

तीन मुट्ठी चावलों को अपने मुख में डालकर आपने अपने मित्र दीन सुदामा के तीनों प्रकार के—दैहिक, दैविक और भौतिक दुखों को नष्ट किया।

प्रेम के साग विदुर घर मांगे।
दुर्योधन के मेवा त्यागे॥

आपने अहंकारी दुर्योधन के महल के पकवानों का परित्याग कर महात्मा विदुर के घर जा प्रेमपूर्वक साग मांग कर खाया।

लखी प्रेम की महिमा भारी।
ऐसे श्याम दीन हितकारी॥

आपके प्रेम की महिमा हमने एक बार नहीं, कई बार देखी है। उससे ज्ञात होता है कि हे श्याम! आप दीन-हीन भक्तों का कितना हित करने वाले हैं।

भारत में पारथ रथ हांके।
लिए चक्र कर नहिं बल थांके॥

महाभारत के युद्ध में आपने पार्थ का रथ हांका और अपने भक्त की रक्षा हेतु अपनी प्रतिज्ञा भंग कर हाथ में रथ का पहिया उठा लिया।

निज गीता के ज्ञान सुनाए।
भक्तन हृदय सुधा वर्षाए॥

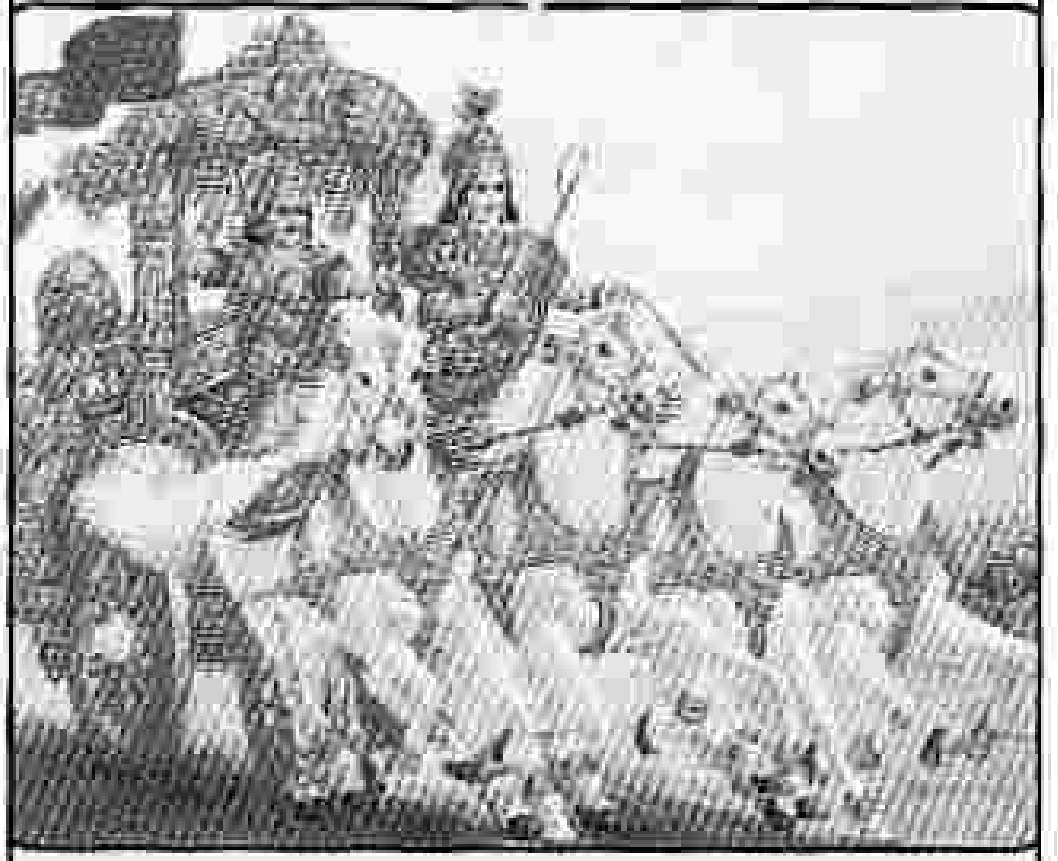

आपने स्वयं गीता का ज्ञान सुनाकर भक्तों के हृदय पर मानो अमृत वर्षा कर उन्हें मृत्यु के भय से सदा-सदा के लिए मुक्त कर दिया।

मीरा थी ऐसी मतवाली।
विष पी गई बजा कर ताली॥

आपकी भक्त मीरा आपकी ऐसी दीवानी थी कि बिना किसी भय के उसने प्रसन्नतापूर्वक कालकूट विष का पान कर लिया।

राणा भेजा सांप पिटारी।
शालिग्राम बने बनवारी॥

(विष के अमृत हो जाने पर) पिटारी में राणा ने (मीरा को मारने के लिए) जो भयंकर सांप भेजा था, हे बनवारी! वह भी शालग्राम बन गया।

निज माया तुम विधिहिं दिखायो।
उर ते संशय सकल मिटायो॥

आपने ब्रह्मा को अपनी माया का ऐसा चमत्कार दिखाया कि उनके समस्त संशय मिट गए। उन्हें विश्वास हो गया कि निर्गुण 'ब्रह्म' ही अवतरित हुए हैं।

तव शत निन्दा करि तत्काला।
जीवन मुक्त भयो शिशुपाला॥

आपको सौ बार गालियां देकर शिशुपाल बिना समय गंवाए, तत्काल अपने जीवन से मुक्त हो गया अर्थात् निंदक को भी आपने परमपद दिया।

जबहिं द्रौपदी टेर लगाई।
दीनानाथ लाज अब जाई॥

जब कौरवों की सभा में (पतियों और श्रेष्ठ जनों की उपस्थिति में) 'हे दीनानाथ! मेरी लाज जा रही है, बचाओ!' ऐसी पुकार द्रौपदी ने की—

तुरतहिं बसन बने नन्दलाला।
बढ़े चीर भए अरि मुंह काला॥

उसी समय हे नंद के लाल! आपने वस्त्रावतार लिया और वस्त्र बन गए। साड़ियों का ऐसा विस्तार हुआ कि शत्रु (दु:शासन) की पराजय हुई।

अस अनाथ के नाथ कन्हैया।
डूबत भंवर बचावत नइया॥

हे कन्हैया! आप तो अनाथों के स्वामी हैं, जो भंवर में डूबती जीवन की नाव को डूबने से बचा लेते हैं अर्थात् शरण आए जीव को तार देते हैं।

सुन्दरदास आस उर धारी।
दयादृष्टि कीजै बनवारी॥

'सुन्दरदास' हृदय में आशा (सिर्फ आप पर भरोसा) रखता हुआ आपके श्रीचरणों में प्रार्थना करता है कि हे बनवारी! मुझ पर दयादृष्टि कीजिए।

नाथ सकल मम कुमति निवारो।
क्षमहु बेगि अपराध हमारो॥

हे नाथ आप मेरे हृदय से कुमति (दुर्वासनाओं के फलस्वरूप गलत निर्णय लेने वाली बुद्धि) का निवारण करें और मेरे अपराधों को क्षमा करें।

खोलो पट अब दर्शन दीजै।
बोलो कृष्ण कन्हैया की जै॥

हे मायापति! माया के झीने पर्दे को हटाकर अब अपने दर्शन दीजिए, अपना रूप दिखाइए। बोलो श्रीकृष्ण-कन्हैया की जय।

॥ दोहा ॥

यह चालीसा कृष्ण का, पाठ करे उर धारि।
अष्ट सिद्धि नवनिद्धि फल, लहै पदारथ चारि॥

जो श्रीकृष्ण के स्वरूप को अपने हृदय में धारण करता हुआ श्रद्धापूर्वक श्रीकृष्ण चालीसा का पाठ करता है, वह आठों सिद्धियों और नौ निधियों के साथ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूपी चारों पुरुषार्थों को प्राप्त करता है।

श्री कृष्णजी की आरती

ॐ जय श्री कृष्ण हरे, प्रभु जय श्री कृष्ण हरे,
भक्तन के दुख सारे पल में दूर करे।
परमानन्द मुरारी मोहन गिरधारी,
जय रस रास बिहारी जय जय गिरधारी।

बरु किंकिन कटि सोहत कानन में बाला,
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै बनमाला।
वेणु मधुर कर सौहे, शोभा अति न्यारी,
संग लसै छवि सुंदर राधा की प्यारी।
दीन सुदामा तारे दरिद्रों के दुख टारे,
गज के फन्द छुड़ाए भव सागर तारे।
हिरण्यकश्यप संहारे नरहरि रूप धरे,
पाहन से प्रभु प्रगटे जग के बीच परे।
केशी कंस विदारे नल कूबर तारे,
दामोदर छवि सुन्दर भगतन के प्यारे।
काली नाग नथैया नटवर छवि सोहे,
फन-फन नाचा करते नागन मन मोहे।
बंधन काटि गिराए, माता शोक हरे,
द्रुपद सुता पत राखी करुणा लाज भरे।

श्रीकृष्ण के १०८ नाम

ॐ, कन्हैया, कृष्ण, केशव, चक्रधारी, नन्दलाल, माधो, सुन्दरश्याम, मुरारी, राधावर, बंसी बजैया, रघुवर, नटवर, नन्द नन्दन, गजाधर, अमर, अजर, अविनाशी, नरोत्तम, अर्जुन सखा, सांवरिया, सांवला, गोपाल, दामोदर, ब्रजनाथ, दयालु, दीनबन्धु, जगदीश, दीनानाथ, जगतपिता, बावन, यशोदा लाल, नारायण, बिहारी, मदन मोहन, कृपानिधि, सर्वरक्षक, ईश्वर, सर्व-शक्तिमान, सर्वव्यापक, मन हरन, बांके बिहारी, गोपीनाथ, ब्रजवल्लभ, गोवर्धन-धारी, घनश्याम, परमानन्द, पतितपावन, ज्योति स्वरूप, राधारमन, माधव, मधुसूदन, रघुपति, राम, हरि, मुरली

मनोहर, श्यामा, कल्याणकारी, अनन्त, परमपिता, प्रभु, परम पवित्र, गोसाईं, भगत वत्सल, वसुदेव, परमात्मा, दुखहरता, विधाता, निरंजन, कालीनाग नथैया, अभय, अन्तर्यामी, सर्वाधार, अद्वैत, घट-घट के वासी, दीनानाथ, दाता, परमेश्वर, रमणीक, निराकार, निर्विकार अच्युत, न्यायकारी, जगत कर्ता, त्रिभुवन नाथ, शंकर, विष्णु, सत्यनारायण, ज्योति स्वरूप, परम पिता, ब्रह्म, संहरता, पालन करता, सत्‌चित्‌ आनन्द स्वरूप, केशव, गोपी वल्लभ, राधेश्याम, सत्यस्वरूप, आनन्ददाता, दयालु, अनादि, कल्याणकारी, विश्व कर्ता, पूर्ण परमानन्द, स्वामिन्‌।

है नमन श्रीकृष्ण तुमको
पाप-ताप हरो हमारे

अच्युताष्टकम्

अच्युतं केशवं रामनारायणं
कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं
जानकीनायकं रामचन्द्र भजे॥

अच्युत, केशव, राम, नारायण, कृष्ण, दामोदर, वासुदेव, हरि, श्रीधर, माधव, गोपिकावल्लभ तथा जानकी नायक रामचन्द्रजी को मैं भजता हूं।

अच्युतं केशवं सत्यभामाधवं
माधवं श्रीधरं राधिकाराधितम्।
इन्दिरामन्दिरं चेतसा सुन्दरं
देवकीनन्दनं नन्दजं सन्दधे॥

अच्युत, केशव, सत्यभामापति, लक्ष्मीपति, श्रीधर, राधिकाजी द्वारा आराधित, लक्ष्मीनिवास, परम सुन्दर, देवकीनन्दन, नन्दकुमार का चित्त से ध्यान करता हूं।

विष्णवे जिष्णवे शङ्खिने चक्रिणे
रुक्मिणीरागिणे जानकीजानये।
वल्लवीवल्लभायार्चितायात्मने
कंसविध्वंसिने वंशिने ते नमः॥

जो विभु हैं, विजयी हैं, शंख-चक्रधारी हैं, रुक्मिणीजी के परम प्रेमी हैं, जानकीजी जिनकी धर्मपत्नी हैं तथा जो व्रजाङ्गनाओं के प्राणाधार हैं उन परमपूज्य, आत्मस्वरूप, कंसविनाशक मुरलीधर को मैं नमस्कार करता हूं।

कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण
श्रीपते वासुदेवाजित श्रीनिधे।
अच्युतानन्त हे माधवाधोक्षज
द्वारकानायक द्रौपदीरक्षक॥

हे कृष्ण! हे गोविन्द! हे राम! हे नारायण! हे रमानाथ! हे वासुदेव! हे अजेय! हे शोभाधाम! हे अच्युत! हे अनन्त! हे माधव! हे अधोक्षज (इन्द्रियातीत)! हे द्वारकानाथ! हे द्रौपदीरक्षक! (मुझ पर कृपा कीजिए)।

राक्षसक्षोभितः सीतया शोभितो
दण्डकारण्यभूपुण्यताकारणः
लक्ष्मणेनान्वितो वानरैः सेवितो-
ऽगस्त्यसम्पूजितो राघवः पातु माम्॥

राक्षसों पर अति कुपित, श्रीसीताजी से सुशोभित, दण्डकारण्य की भूमि की पवित्रता के कारण, श्रीलक्ष्मणजी द्वारा अनुगत, वानरों से सेवित, श्रीअगस्त्यजी से पूजित रघुवंशी श्रीराम मेरी रक्षा करें।

धेनुकारिष्टकानिष्टकृद्द्वेषिहा
केशिहा कंसहृद्वंशिकावादकः।
पूतनाकोपकः सूरजाखेलनो
बालगोपालकः पातु मां सर्वदा॥

धेनुक और अरिष्टासुर आदि का अनिष्ट करने वाले, शत्रुओं का ध्वंस करने वाले, केशी और कंस का वध करने वाले, वंशी को बजाने वाले, पूतना पर कोप करने वाले, यमुनातट विहारी बालगोपाल मेरी सदा रक्षा करें।

विद्युद्द्योत-वत्प्रस्फुर-द्वाससं
प्रावृडम्भोदवत्प्रोल्लसद्विग्रहम् ।
वन्यया मालया शोभितोर:स्थलं
लोहिताङ्घ्रिद्वयं वारिजाक्षं भजे ॥

विद्युत्प्रकाश के सदृश जिनका पीताम्बर विभासित हो रहा है, वर्षाकालीन मेघों के समान जिनका अति शोभायमान शरीर है, जिनका वक्ष:स्थल वनमाला से विभूषित है और चरणयुगल अरुणवर्ण हैं, उन कमलनयन श्रीहरि को भजता हूं।

कुञ्चितैः कुन्तलैर्भ्राजमाननं
रत्नमौलिं लसत्कुण्डलं गण्डयो: ।
हारकेयूरकं कङ्कणप्रोज्ज्वलं
किङ्किणीमञ्जुलं श्यामलं तं भजे ॥

जिनका मुख घुंघराली अलकों से सुशोभित हो रहा है, उज्ज्वल हार, केयूर (बाजूबन्द), कङ्कण और किङ्किणी-कलाप से सुशोभित उन मञ्जुलमूर्ति श्रीश्यामसुन्दर को भजता हूं।

अच्युतस्याष्टकं यः पठेदिष्टदं
प्रेमतः प्रत्यहं पूरुषः सस्पृहम्।
वृत्ततः सुन्दरं कर्तृविश्वम्भर-
स्तस्य वश्यो हरिर्जायते सत्वरम्॥

जो पुरुष इस अति सुन्दर छन्द वाले और अभीष्ट फलदायक अच्युताष्टक को प्रेम और श्रद्धा से नित्य पढ़ता है, विश्वम्भर विश्वकर्ता श्रीहरि शीघ्र ही उसके वशीभूत हो जाते हैं, उसकी समस्त कामनाओं की पूर्ति होती है।

गोविन्ददामोदरस्तोत्रम्

अग्रे कुरूणामथ पाण्डवानां
दुःशासने-नाहृत-वस्त्र-केशा।
कृष्णा तदाक्रोशदनन्यनाथा
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

जब कौरव और पाण्डवों के सामने दुःशासन ने द्रौपदी के वस्त्र और बालों को पकड़कर खींचा, तब अनन्य अनाथ द्रौपदी ने रोकर पुकारा—'हे गोविन्द! हे दामोदर! हे माधव!—

श्रीकृष्ण विष्णो मधुकैटभारे
भक्तानुकम्पिन् भगवन् मुरारे।
त्रायस्व मां केशव लोकनाथ
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

हे श्रीकृष्ण! हे विष्णो! हे मधुकैटभ को मारने वाले! हे भक्तों के ऊपर अकारण अनुकम्पा करने वाले! हे भगवन्! हे मुरारे! हे केशव! हे लोकेश्वर! हे गोविन्द! हे दामोदर! हे माधव! मेरी रक्षा करो, रक्षा करो।'

ध्येयः सदा योगिभिरप्रमेय-
श्चिन्ताहरश्चिन्तितपारिजातः।
कस्तूरिका-कल्पित-नीलवर्णो
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

योगी भी जिन्हें ठीक-ठीक नहीं जान पाते, जो सभी प्रकार की चिन्ताओं को हरने वाले और मनोवांछित वस्तुओं को देने के लिए कल्पवृक्ष के समान हैं तथा जिनके शरीर का वर्ण कस्तूरी के समान

नीला है, उन्हें सदा ही 'गोविन्द! दामोदर! माधव!' इन नामों से स्मरण करना चाहिए।

संसारकूपे पतितोऽत्यगाधे
मोहान्धपूर्णे विषयाभितप्ते।
करावलम्बं मम देहि विष्णो
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

जो मोहरूपी अंधकार से व्याप्त और विषयों की ज्वाला से सन्तप्त है, ऐसे अथाह संसार रूप कूप में मैं पड़ा हुआ हूं। हे मेरे मधुसूदन! हे गोविन्द! हे दामोदर! हे माधव! मुझे अपने हाथ का सहारा दीजिए।

त्वामेव याचे मम देहि जिह्वे
समागते दण्डधरे कृतान्ते।

वक्तव्यमेवं मधुरं सुभक्त्या
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

हे जिह्वे! मैं तुझी से एक भिक्षा मांगता हूं, तू ही मुझे दे। वह यह कि जब दण्डपाणि यमराज इस शरीर का अंत करने आवें तो बड़े ही प्रेम से गद्‌गद स्वर में 'हे गोविन्द! हे दामोदर! हे माधव!' इन मञ्जुल नामों का उच्चारण करती रहना।

भजस्व मन्त्रं भवबन्धमुक्त्यै
जिह्वे रसज्ञे सुलभं मनोज्ञम्।
द्वैपायनाद्यैर्मुनिभिः प्रजप्तं
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

हे जिह्वे! हे रसज्ञे! संसाररूपी बंधन को काटने के लिए तू सर्वदा 'हे गोविन्द! हे

दामोदर ! हे माधव !' इस नामरूपी मंत्र का जप किया कर, जो सुलभ एवं सुन्दर हैं और जिसे व्यास, वसिष्ठादि ऋषियों ने भी जपा है।

गोपाल वंशीधर रूपसिन्धो
लोकेश नारायण दीनबंधो।
उच्चस्वरैस्त्वं वद सर्वदैव
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

रे जिह्वे ! तू निरन्तर 'गोपाल ! वंशीधर ! रूपसिन्धो ! लोकेश ! नारायण ! दीनबन्धो ! गोविन्द ! दामोदर ! माधव !' इन नामों का उच्च स्वर से कीर्तन किया करती रहना।

जिह्वे सदैवं भज सुन्दराणि
नामानि कृष्णस्य मनोहराणि।

समस्त-भक्तार्ति-विनाशनानि
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

हे जिह्वे! तू सदा ही श्रीकृष्णचन्द्र के 'गोविन्द! दामोदर! माधव!' इन मनोहर मञ्जुल नामों को, जो भक्तों के संकटों की निवृत्ति करने वाले हैं, भजती रह।

गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे
गोविन्द गोविन्द मुकुन्द कृष्ण।
गोविन्द गोविन्द रथाङ्गपाणे
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

हे जिह्वे! 'गोविन्द! गोविन्द! हरे! मुरारे! गोविन्द! गोविन्द! मुकुन्द! कृष्ण! गोविन्द! गोविन्द! रथाङ्गपाणे! गोविन्द! दामोदर! माधव!' इन नामों को तू सदा जपती रह।

सुखावसाने त्विदमेव सारं
दुःखावसाने त्विदमेव गेयम्।
देहावसाने त्विदमेव जाप्यं
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

सुख के अंत में यही सार है अर्थात् सभी सुख इसी नाम में समाहित हैं। दुख के अन्त में यही गाने योग्य है और शरीर का अंत होने के समय भी 'हे गोविन्द! हे दामोदर! हे माधव!' यही मंत्र जपने योग्य है।

दुर्वारवाक्यं परिगृह्य कृष्णा
मृगीव भीता तु कथं कथञ्चित्।
सभां प्रविष्टा मनसाजुहाव
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

दुःशासन के दुर्वचनों को स्वीकार कर

मृगी के समान भयभीत हुई द्रौपदी किसी तरह सभा में प्रवेश कर स्वयं को अनाथ मानती हुई मन ही मन 'गोविन्द! दामोदर! माधव!' इस प्रकार भगवान का स्मरण करने लगी।

श्रीकृष्ण राधावर गोकुलेश
गोपाल गोवर्धन नाथ विष्णो।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

हे जिह्वे! तू 'श्रीकृष्ण! राधारमण! व्रजराज! गोपाल! गोवर्धन! नाथ! विष्णो! गोविन्द! दामोदर! माधव!'— इन नामामृत का निरन्तर पान करती रह।

श्रीनाथ विश्वेश्वर विश्वमूर्ते
श्रीदेवकीनन्दन दैत्यशत्रो

जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

हे जिह्वे! तू 'श्रीनाथ! सर्वेश्वर! श्रीविष्णु स्वरूप देवकीनन्दन! असुर निकन्दन! गोविन्द! माधव!'—इस नामामृत का निरन्तर पान करती रह।

गोपीपते कंसरिपो मुकुन्द
लक्ष्मीपते केशव वासुदेव।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

हे जिह्वे! तू 'गोपीपते! कंसरिपो (कंस का संहार करने वाले)! मुकुन्द! लक्ष्मीपते! केशव! वासुदेव! गोविन्द! माधव!'—इस नामामृत का निरन्तर पान करती रह।

गोपीजनाह्लादकर व्रजेश
गोचारणा-रण्य-कृत-प्रवेश।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

व्रजराज, व्रजाङ्गनाओं को आनन्दित करने वाले, जिन्होंने गौओं को चराने के लिए वन में प्रवेश किया, हे जिह्वे! तू उन्हीं मुरारि के 'गोविन्द! दामोदर! माधव!'— इस नामामृत का निरन्तर पान कर।

प्राणेश विश्वम्भर कैटभारे
वैकुण्ठ नारायण चक्रपाणे।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

हे जिह्वे! तू 'प्राणेश! विश्वम्भर! कैटभारे! वैकुण्ठ! नारायण! चक्रपाणे! गोविन्द!

दामोदर! माधव!'—इस नामामृत का निरन्तर पान करती रह।

हरे मुरारे मधुसूदनाद्य
श्रीराम सीतावर रावणारे।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

'हे हरे! हे मुरारे! हे मधुसूदन! हे पुराणपुरुषोत्तम! हे रावणारे! हे सीतापते श्रीराम! हे गोविन्द! हे दामोदर! हे माधव!'—इस नामामृत का हे जिह्वे! तू निरन्तर पान करती रह।

श्रीयादवेन्द्राद्रिधराम्बुजाक्ष
गोगोपगोपीसुखदानदक्ष।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

हे जिह्वे! 'श्रीयदुकुलनाथ! गिरिधर! कमलनयन! गौ, गोप और गोपियों को सुख देने में कुशल श्रीगोविन्द! दामोदर! माधव!'—इस नामामृत का निरन्तर पान करती रह।

धरा-भरोत्तारण-गोप-वेश
विहारलीला-कृतबन्धुशेष।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

जिन्होंने पृथ्वी का भार उतारने के लिए सुन्दर ग्वाला का रूप धारण किया है और आनन्दमयी लीला करने के निमित्त ही शेषजी (बलराम) को अपना भाई बनाया है, ऐसे उन नटवर नागर के 'गोविन्द! दामोदर! माधव!'—इस नामामृत का तू निरन्तर पान करती रह।

बकी-बकाघासुर-धेनुकारे
केशी-तृणावर्तविघातदक्ष।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

जो पूतना, बकासुर, अघासुर और धेनुकासुर आदि राक्षसों के शत्रु हैं और केशी तथा तृणावर्त को पछाड़ने वाले हैं, हे जिह्वे! उन असुरारि मुरारि के 'गोविन्द! दामोदर! माधव!'—इस नामामृत का तू निरन्तर पान करती रह।

श्रीजानकीजीवन रामचन्द्र
निशाचरारे भरताग्रजेश।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति

'हे जानकीजीवन भगवान राम! हे

दैत्यदलन भरताग्रज ! हे ईश ! हे गोविन्द ! हे दामोदर ! हे माधव !'—इस नामामृत का हे जिह्वे ! तू निरन्तर पान करती रह।

नारायणानन्त हरे नृसिंह
प्रह्लादबाधाहर हे कृपालो।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

'हे प्रह्लाद की बाधा हरने वाले दयामय नृसिंह ! नारायण ! अनन्त ! हरे ! गोविन्द ! दामोदर ! माधव !'—इस नामामृत का हे जिह्वे ! तू निरन्तर पान करती रह।

लीला-मनुष्याकृति-रामरूप
प्रताप-दासी-कृत-सर्वभूप।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

हे जिह्वे! जिन्होंने लीला ही से मनुष्यों की सी आकृति बनाकर रामरूप प्रकट किया हैं और अपने प्रबल पराक्रम से सभी भूपों को दास बना लिया है, तू उन नीलाम्बुज श्यामसुन्दर श्रीराम के 'गोविन्द! दामोदर! माधव!'—इस नामामृत का ही निरन्तर पान करती रह।

श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे
हे नाथ नारायण वासुदेव।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

हे जिह्वे! तू 'श्रीकृष्ण! गोविन्द! हरे! मुरारे! हे नाथ! नारायण! वासुदेव! तथा गोविन्द! दामोदर! माधव!' इस नामामृत का ही निरन्तर प्रेमपूर्वक पान कर।

वक्तुंसमर्थोऽपि न वक्ति कश्चिद्दहो
जाननां व्यसनाभिमुख्यम्।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

अहो! मनुष्यों की विषयलोलुपता कैसी आश्चर्यजनक है! कोई-कोई तो बोलने में समर्थ होने पर भी भगवान नाम का उच्चारण नहीं करते; किन्तु हे जिह्वे! मैं तुमसे कहता हूं, तू 'गोविन्द! दामोदर! माधव!'—इस नामामृत का ही निरन्तर प्रेमपूर्वक पान करती रह।

चतुःश्लोकी भागवतम्

ज्ञानं परमगुह्यं मे यद्विज्ञानसमन्वितम्।
सरहस्यं तदङ्गं च गृहाण गदितं मया॥

श्री भगवान बोले—(हे चतुरानन!) मेरा जो ज्ञान परम गोप्य है, विज्ञान (अनुभव) से युक्त है और भक्ति के सहित है उसको और उसके साधन को मैं कहता हूं सुनो।

यावानहं यथाभावो यद्रूपगुणकर्मकः।
तथैव तत्त्वविज्ञानमस्तु ते मदनुग्रहात्॥

मेरे जितने स्वरूप हैं, जिस प्रकार मेरी सत्ता है और जो मेरे रूप, गुण, कर्म हैं, मेरी कृपा से तुमको उसी प्रकार तत्व का विज्ञान हो।

अहमेवासमेवाग्रे नान्यद्यत्सदसत्परम्।
पश्चादहं यदेतच्च योऽवशिष्येत सोऽस्म्यहम्॥

सृष्टि के पूर्व केवल मैं ही था, मेरे अतिरिक्त जो स्थूल, सूक्ष्म या प्रकृति है, इनमें से कुछ भी न था, सृष्टि के पश्चात् भी मैं ही था, जो यह जगत् (दृश्यमान) है, यह भी मैं ही हूं और प्रलयकाल में जो शेष रहता है, वह मैं ही हूं।

ऋतेऽर्थं यत्प्रतीयेत न प्रतीयेत चात्मनि।
तद्विद्यादात्मनो मायां यथाऽऽभासो यथा तमः॥

जिसके कारण आत्मा में वास्तविक अर्थ के न रहते हुए भी उसकी प्रतीति हो और अर्थ के रहते हुए भी उसकी प्रतीति न हो, उसी को मेरी माया जानो, जैसे आभास (एक चन्द्रमा में दो चन्द्रमा का भ्रमात्मक ज्ञान) और जैसे राहु (राहु जैसे ग्रहमण्डलों में स्थित होकर भी नहीं दीख पड़ता)।

यथा महान्ति भूतानि भूतेषूच्चावचेष्वनु।
प्रविष्टान्यप्रविष्टानि तथा तेषु न तेष्वहम्॥
जैसे पांच महाभूत उच्चावच भौतिक पदार्थों में प्रविष्ट और अप्रविष्ट भी रहता हूं (इस प्रकार मेरी सत्ता है)।
एतावदेव जिज्ञास्यं तत्त्वजिज्ञासुनात्मनः।
अन्वयव्यतिरेकाभ्यां यत्स्यात्सर्वत्र सर्वदा॥
आत्मा के तत्व जिज्ञासु के लिए इतना ही जिज्ञास्य है, जो अन्वयव्यतिरेक से सर्वत्र और सर्वदा रहे वही आत्मा है।
एतन्मतं समातिष्ठ परमेण समाधिना।
भवान्कल्पविकल्पेषु न विमुह्यति कर्हिचित्॥
परम एकाग्रता से इस मत का अनुष्ठान करें, कल्प की विविध सृष्टियों में आपको कभी भी कर्तापन का अभिमान न होगा।